Shodh Sangam Patrika
E-ISSN: 3049-0707, Volume 2 | Issue 4 | (Oct – Dec 2025)

बंगाल में धार्मिक सामाजिक अनुष्ठानों में मृण पात्रों व उत्पादों का पारंपरिक महत्त्व

डॉ. अर्चना दास
सहायक आचार्य, सिरामिक एवं ग्लास डिज़ाइन विभाग,
कला भवन, विश्वभारती, शान्तिनिकेतन

सारांश

प्रस्तुत लेख में बंगाल में (हिंदू धर्म में) धार्मिक-सामाजिक अनुष्ठानों में उपयोग किए जाने वाले मिट्टी के पात्रों और अन्य उत्पादों के निर्माण के माध्यम से हम प्राचीन भारतीय दर्शन और धार्मिक मान्यताओं का विश्लेषण करेंगे। मृण पात्रों के आकारों की अभूतपूर्व संकल्पना और इन्हें निर्मित करने की विभिन्न तकनीकें हमें सिंधु घाटी से प्राप्त होती हैं, जो उत्तरोत्तर वैदिक काल से होते हुए समग्र प्राचीन भारतीय इतिहास (गुप्त काल तक) आरोपित होती हैं। लेख में लोक परम्पराओं पर आधारित उन टेराकोटा (पकी हुई मिट्टी) निर्मित पात्रों और अन्य शुभ माने जाने वाले उत्पादों का परिचय प्रस्तुत किया गया है, जिनका उपयोग प्रचलित रूप से जनसामान्य के मध्य होता है। इसके अतिरिक्त ये उत्पाद हस्तशिल्प की श्रेणी में भी गणमान्य होते हैं तथा वर्तमान समय में भारतीय सांस्कृतिक धरोहर के रूप में स्वीकार्य हैं।

बीज शब्द : बंगाली मृण कला, बंगाल टेराकोटा, कर्मकांडीय पात्र, बंगाली पॉटरी

परिचय :

प्राचीन भारतीय दृश्य कलाएँ मात्र सौंदर्यानुभूति से प्रेरित नहीं रही हैं, बल्कि इनके निर्माण के नैपथ्य में दार्शनिक एवं धार्मिक विश्वासों की गहरी नींव आधारित है। इनके भौतिक स्वरूप और अभिव्यक्ति में निहित प्रतीकात्मकता हमारे समाज के पुरातन पारंपरिक बोध को अपने भीतर समेटे हुए है, जो भारतीय संस्कृति की विकास यात्रा का प्रस्थान-बिंदु कही जा सकती है। वर्तमान समय में भी अवसरानुकूल रूप से विभिन्न रीति-रिवाजों में हम इन दृश्य कलाओं का उपयोग करते हैं, उदाहरण स्वरूप भूमि या भित्ति चित्रण, मिट्टी, आटे या उपलों से त्रिआयामी आकृतियों का निर्माण, विशिष्ट प्रकार के चढ़ावे के वस्त्रों का निर्माण या विशेष पूजा-पद्धतियों के लिए मिट्टी के पात्रों का निर्माण, जिसमें कलश सर्वसामान्य है। ये सभी विधाएँ किसी न किसी प्रकार अधिभौतिक विचारों की अभिव्यक्ति प्रस्तुत करती हैं तथा एक-दूसरे से संबद्ध रही हैं।

हमारे यहाँ मिट्टी शुद्धता और पवित्रता की प्रतीक मानी जाती है। ग्रामीण जनजीवन में कच्चे घरों की लिपाई, हाथों और बर्तनों को धोने के लिए राख वाली मिट्टी का उपयोग हमारे पुरातन पारंपरिक तौर-तरीकों को प्रदर्शित करता है। तमाम लोकशिल्पों के उदाहरण तो हमें अपने घरों से ही प्राप्त होते हैं, जैसे घरों में प्रतिष्ठित होने वाली देवमूर्तियाँ, मिट्टी के दूहे, चूल्हे, दीवाली में निर्मित दिए, मिट्टी के घरोंदे, खिलौने व कलश इत्यादि। मिट्टी के पात्रों के संदर्भ में इनकी धार्मिक प्रतीकात्मकता को देवतुल्य माना गया है, जिसके उल्लेख हमें वैदिक और उत्तर वैदिक साहित्यों में प्रचुरता से मिलते हैं। उदाहरण स्वरूप पूर्णघट, पानी से भरा बर्तन शुभ संकेत का प्रतीक माना जाता है और प्रायः पारंपरिक समारोहों में इसका प्रयोग किया जाता है। यह प्रचुरता और समृद्धि का प्रतिनिधित्व करता है। इसी प्रकार कुंभ या कलश का महत्त्व हिंदू, बौद्ध और जैन अनुष्ठानों में सर्वोपरि है, जो धन, उर्वरता और नश्वर अवशेषों के भंडार का प्रतीक है।

कुछ विशेष प्रकार के बर्तनों का उपयोग देवताओं को अर्पण करने के लिए, शुभ समारोहों में सजावटी तत्वों के रूप में या उत्सवों के दौरान उपहारों के आदान-प्रदान के लिए किया जाता है। यहाँ तक कि कुछ अनुष्ठानों में

देवताओं और देवियों को बर्तन (घट) में उतरते हुए दिखाया जाता है। यह उपासक और इष्ट के बीच मध्यस्थता का प्रतीक माना जाता है। एक कथा के अनुरूप विश्वकर्मा को मृण पात्र का पहला सर्जक या कुम्हार भी कहा गया है।

बंगाल के विशेष संदर्भ में यह तथ्य अत्यंत जीवंत हो जाता है क्योंकि प्रत्येक काल में बंगाल कला एवं साहित्य की गतिविधियों में अग्रणी रहा है। बंगाल की सामाजिक धार्मिक मान्यताओं की अभिव्यक्ति हमें यहाँ की लोककलाओं में बखूबी दिखती है। उदाहरण स्वरूप कालीघाट के मंदिरों के निकट विकसित जादू पटुआ या यम पट, चित्रित टेराकोटा के विशालकाय पात्र, बंगाल का प्रसिद्ध विष्णुपुर मंदिर परिक्षेत्र (टेराकोटा टाइलों के लिए प्रसिद्ध) या बाँकुड़ा के घोड़े इत्यादि। ये सभी आज भी भारतीय संस्कृति की अनूठी धरोहर तो हैं ही, अपितु इनका धार्मिक-सामाजिक महत्त्व भी यथावत् बरकरार है।

धार्मिक सामाजिक अनुष्ठानों में प्रयुक्त होने वाले पात्र एवं अन्य उत्पादः बंगाल में अनुष्ठानों में प्रयुक्त होने वाले मिट्टी के पात्रों व उत्पादों को इनके अद्वितीय रूप स्वरूप और तकनीकी निर्माण की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण माना जाना चाहिए। इनका विवरण आगे प्रस्तुत किया गया है।

मनसा घट : मनसा का अर्थ है साँप की देवी। ग्रामीण बांग्लादेश और पश्चिम बंगाल में यह एक लोकप्रिय अनुष्ठान विषय है। देवी मनसा की पूजा के लिए टेराकोटा के बर्तन या छोटे प्रतीकों के साथ चित्रित टेराकोटा बर्तन का उपयोग किया जाता है। इसका उद्देश्य साँप के काटने से बचना है। हिंदू धर्म के अनुसार, देवी मनसा प्रजनन क्षमता प्रदान करती हैं। इस प्रकार के घट को हिंदू घर में मनसा मंदिर में रखा जाता है। टेराकोटा मिट्टी के बर्तनों के अलावा, देवी मनसा की कोई विशिष्ट मूर्ति या छवि नहीं है।

पुराणों में मनसा देवी के रूप का कोई वर्णन नहीं है, लेकिन अष्ट नाग, जिसका अर्थ है एक घूँघट वाला साँप, एक मूर्ति के रूप में पूजा करने के लिए टेराकोटा कलश के गोल शरीर पर चित्रित किया जाता है, जो एक अद्भुत लोक-सौंदर्य विशेषता है। इन्हें गाँव के कुम्हार बनाते हैं और चित्रकार मिट्टी के बर्तनों पर मनसा की छवि उकेरते हैं। मनसा घट के ऊपरी भाग पर नाग देवी का सिर, चेहरा, गला और गर्दन चित्रित की जाती है। निचला भाग छाती और पेट को दर्शाता है। देवी के माथे पर एक आँख चित्रित की जाती है, जिसे त्रिनयन कहा जाता है, जिसके माध्यम से हिंदू उपासकों के लिए देवी मनसा पूर्ण रूप लेती हैं। एक या एक से अधिक साँपों के चेहरे वाले मिट्टी के बर्तनों को पश्चिम बंगाल में नाग घट कहा जाता है। बाँस के बेलनाकार नाग-घट को कैतुरी घट कहा जाता है। पश्चिम बंगाल के विशाल क्षेत्र में इस प्रकार के मनसा घट को बारा भी कहा जाता है। मनसा पूजा उत्सव वर्ष के जुलाई से अगस्त महीने में आयोजित किया जाता है।

मनसा घट की संरचना : मनसा पूजा में उपयुक्त मृण पात्र को निम्नलिखित मुख्य श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है।

साँप के फन वाली कोबरा आकृति या मनसा देवी के सिर और चेहरे को छोड़कर केवल मनसा देवी का शरीर दर्शाया गया है। मनसा घट प्रायः 10 इंच से 20 इंच और 20 इंच से 25 इंच तक ऊँचा होता है। हाल ही में चटगाँव जिले के हाथजारी क्षेत्र के कुलालपारा में डॉ. शहरयार तालुकदार के शोध में पंचमुखी मनसा घट नामक एक प्रकार का अनुष्ठानिक मनसा घट खोजा गया है। इसकी विशेषता यह है कि मूल चेहरे के अलावा, इसकी गर्दन के पास चार अन्य चेहरे पाए गए हैं, जो ज्यादातर एप्लिक शैली में जोड़े गए हैं। इसलिए इसे पंचमुखी मनसा घट के नाम से जाना जाता है।

चित्र 1 : मनसा देवी के सिर और चेहरे वाला

इसमें लाल, हरे, नीले, पीले आदि रंगों के डिज़ाइन होते हैं। डिज़ाइन को सफेद या हल्के पीले रंग की कोटिंग पर चित्रित किया जाता है। नागपंचमी पूजा प्रायः पंचमुखी मनसा घट के साथ की जाती है। इसके अलावा, बांग्लादेश के बारीसाल, सिलहट, फरीदपुर, मैमनसिंह, चटगाँव और कोमिला जिले में पारंपरिक मनसा घट के साथ मनसा पूजा देखी गई है।

लक्ष्मी सार : लक्ष्मी सार एक गोल चित्रित टेराकोटा मिट्टी के बर्तन का ढक्कन है। इस पर विभिन्न रूपांकनों या देवी लक्ष्मी, राधा-कृष्ण, दुर्गा देवी और अन्य अनुष्ठानिक आकृतियाँ चित्रित की जाती हैं। इसका शाब्दिक अर्थ है 'आवरण'। पूजा या अनुष्ठानों के विभिन्न विषयों को बहुत ही सुंदर अभिव्यक्तियों के साथ कलात्मक मुद्राओं में ढक्कन की पीठ पर चित्रित किया गया है। बांग्लादेश के हिंदू लक्ष्मी सार को वेदी पर या पूजा के लिए भी रखते हैं। यह विशेष रूप से ग्रामीण बंगाल में देखा जाता है। लक्ष्मी सार के एक अन्य प्रकार को आचार्य लक्ष्मी-सार कहा जाता है, जिसे केवल बांग्लादेश के आचार्य ब्राह्मणों द्वारा बनाया और चित्रित किया जाता है। राजशाही जिले में यह जेसोर, कुश्तिया, खुलना में देखा जाता है। ढाका जिले के फरीदपुर, मदारीपुर और रेयर बाजार लक्ष्मी सार बनाने और बेचने के लिए मशहूर हैं। फरीदपुर और मदारीपुर में लक्ष्मी सार बनाने से जुड़े कई लोक कलाकार परिवार ब्रिटिश काल में पश्चिम बंगाल चले गए। नतीजतन, यह कला वहाँ भी देखने को मिलती है।

लक्ष्मी सार की संरचना : ये लक्ष्मी सार छोटे, मध्यम, बड़े समेत कई आकार के होते हैं। लक्ष्मी सार में मूर्तियों को रंगने के लिए वॉटर कलर ब्रश का इस्तेमाल किया जाता है। कलाकार कलात्मक कौशल के साथ मोटे या नुकीले ब्रश से सतह पर देवी की आकृति बनाते हैं। अत्यंत बारीक सुई के स्ट्रोक से देवी की आँखें, होंठ, नाक, उंगलियाँ, कपड़े, आभूषण, मुकुट बनाए जाते हैं। लक्ष्मी सार के कलाकार चित्रण बहुत जल्दी और सही माप के साथ करते हैं, जिससे लोक कलात्मक कौशल का परिचय सहज ही होता है। चित्रांकन में प्राथमिक रंग लाल, नीला व पीला खास तौर पर इस्तेमाल किए जाते हैं। कभी-कभी हरा, नारंगी और बैंगनी रंग भी इस्तेमाल किया जाता है। ज्यादातर मामलों में रंगों का इस्तेमाल इम्प्लांट स्टाइल या फ्लैट स्टाइल में किया जाता है ताकि अनूठी विशेषताओं को सामने लाया जा सके। त्रि-आयामिता, पारदर्शिता और टोनल भिन्नता से बचा जाता है, जो लोककला की विशेषता है। आमतौर पर देवताओं के शरीर के लिए पीले रंग का इस्तेमाल किया जाता है, हालाँकि कृष्ण के शरीर के लिए गहरे नीले रंग का प्रयोग किया जाता है, जैसा कि हिंदू शास्त्रों में वर्णित है।

लक्ष्मी सार को रेखाचित्र के माध्यम से दो भागों में विभाजित किया जाता है। किनारे पर एक से डेढ़ इंच चौड़ी लाल रेखा खींची जाती है। दो वृत्त बनाए जाते हैं बड़ा वाला सबसे ऊपर और छोटा वाला सबसे नीचे। कभी-कभी सार को एक खड़ी रेखा द्वारा चार या पाँच भागों में विभाजित किया जाता है। ऐसे बर्तनों में लोक कलाकार लक्ष्मी देवी को राधा-कृष्ण को गले लगाते हुए दिखाने का भी अंकन करते हैं।

सार के ऊपरी भाग में दुर्गा देवी और उनके पति का अंकन प्रायः किया जाता है। अपवाद के रूप में, लक्ष्मी-नारायण को मध्य ऊपरी भाग में, हाथी की मुख्य आकृति के रूप में देखा जाता है। कभी-कभी मुख्य आकृति के दोनों ओर दो महिला आकृतियाँ चित्रित की जाती हैं, जो लक्ष्मी या अंकित देवी की दो सहेलियों का प्रतिनिधित्व करती हैं। जबकि कुछ चित्रों में लक्ष्मी देवी और उनकी सहेलियाँ एक मोर की नाव में दिखाई देती हैं।

चित्र 2 : लक्ष्मी सार

मंगल घट : किसी घर में पवित्र अनुष्ठान के दौरान मंगल घट रखने से दैवीय कृपा प्राप्त की जा सकती है। ये छोटे आकार के रंगीन टेराकोटा मिट्टी के बर्तन होते हैं। विभिन्न धार्मिक और सामाजिक विषयों को समोए हुए, पात्रों पर यह चिकनी और सुंदर पेंटिंग बंगाल और बांग्लादेश के सार्वजनिक जीवन में विभिन्न उद्देश्यों के लिए एक लोकप्रिय धार्मिक साधन बन गई है। इसमें लोक परंपराओं की भी लंबी परंपरा है।

मंगल घट आमतौर पर शुभ कार्य के लिए घर के सामने या घर के दरवाजे के सामने रखा जाता है। इन शुभ कार्यों में धार्मिक अनुष्ठान या सामाजिक कार्यक्रम शामिल हैं, यथा शादी, जन्मदिन, नामकरण, गृहस्थी का निर्माण या नए गृहस्थी में शुभ प्रवेश, फसल कटाई और सांस्कृतिक कार्यक्रम। यहाँ तक कि मंगल घट को पूजा समारोहों या पूजा पंडालों में भी रखा जाता है। अधिकांश ग्रामीण कस्बों में मंगल घट का उपयोग इसी तरह किया जाता है। सरल ग्रामीण लोगों का मानना है कि मंगल घट एक शुभ कलश है, जिसे अगर कहीं भी रखा जाए तो बुरी ऊर्जा दूर हो जाती है और अच्छे कामों का सुंदर तरीके से संपादन होता है।

मंगल घट की संरचना : पेंटिंग के जरिए टेराकोटा कलसी को धीरे-धीरे मंगल घट में बदल दिया गया। ज्यादातर मामलों में मंगल घट में डिज़ाइन बनाने का काम महिलाएँ करती हैं। मंगल घट के रंगीन डिज़ाइनों के रूपांकनों में ज्यामितीय और अमूर्त रूप, फूल, पत्ते के डिज़ाइन, मछली, पक्षी आदि शामिल हैं। मंगल घट पर बहुत ही सरलता से रूपांकनों को चित्रित किया जाता है। इसमें नीला, पीला, काला, हरा आदि रंगों का प्रयोग किया जाता है।

हिंदू समारोहों में शुभता और मंगलता को व्यक्त करने के लिए मंगल घट को विशेष रूप से सिंदूर से लेपित किया जाता है। आमतौर पर लोक समारोहों में काले रंग का उपयोग नहीं किया जाता है, लेकिन कई बार मंगल घट में काले रंग का प्रयोग किया जाता है, क्योंकि मान्यता है कि यह रंग बुरी ऊर्जा को दूर करने में विशेष भूमिका निभाएगा। शुभ धार्मिक या सामाजिक अवसरों पर दो छोटे केले के पौधे लाकर घर के दरवाजे के सामने ज़मीन में गाड़ दिए जाते हैं। इनके नीचे सुंदर ढंग से डिज़ाइन किए गए टेराकोटा के पानी से भरे बर्तन या घड़े रखे जाते हैं। मंगल घट या कलसी पर कुछ आम पात रखे जाते हैं। क्रमशः दो हरे नारियल भी रखे जाते हैं। मंगल घट लोककला मान्यताओं और अनुष्ठानों की सौंदर्यपूर्ण सुगंध से भरपूर बनाया जाता है।

लोक परंपरा के अनुसार हरे केले या आम का पत्ता लंबी आयु का प्रतीक है, पानी जीवन का प्रतीक है, और हरा नारियल प्रजनन शक्ति या उत्पादकता का प्रतीक है। अनुष्ठान समारोह समाप्त होने के बाद, मंगल घट को कमरे में ले जाया जाता है। ग्रामीण बंगाल के लोगों की यह लोक मान्यता है कि यह खूबसूरती से बनाया गया बर्तन घर की सुंदरता को बढ़ाता है और घर को बुरी शक्तियों से सुरक्षित रखता है। प्राचीन आदिवासी समाजों में जादुई मान्यताओं के प्रतीक के रूप में मंगल घट का उपयोग किया जाता था। शोधकर्ता अब्दुल हक चौधरी के अनुसार, चटगाँव जिले के प्राचीन हिंदू, मुस्लिम और बौद्ध समाजों में मंगल घट का प्रचलन था। वर्तमान में मंगल घट का उपयोग उसी प्रथा का विस्तार है।

याओ सार मंगल घट : याओ सार मंगल घट, ढक्कन के साथ डिज़ाइन किया गया मंगल घट है। इसका उपयोग हिंदू समाज में विवाह समारोह में किया जाता है। इसे दरवाजे या गेट पर नहीं रखा जाता है। इसका उपयोग विवाह समारोहों के आनंद कार्य में एक अनुष्ठानिक बर्तन के रूप में किया जाता है। इसके अंदर सिंदूर, शंख, सिक्के, कुछ अनाज, टेराकोटा लैंप और सौंदर्य प्रसाधन जैसी पवित्र वस्तुएँ रखी जाती हैं। 'याओ' का अर्थ है विवाहित महिला या वह महिला जिसका पति जीवित है, और 'सार' का अर्थ है आवरण। लेकिन यहाँ पूरी घटना अमूर्त अर्थ को व्यक्त करती है। विवाहित महिलाएँ या कुंवारी लड़कियाँ भी याओ सार मंगल घट के चारों ओर शादी की सजावट की व्यवस्था सहित विभिन्न गतिविधियों में भाग लेती हैं। इन गतिविधियों में विधवाओं का भाग लेना निषिद्ध है।

याओ सार मंगल घट की संरचना : ये आमतौर पर दो से साढ़े तीन फीट लंबे होते हैं, कभी-कभी तीन से चार फीट तक। महिलाएँ मूर्तियों को एप्लिक के रूप में गोलाकार रूप से जोड़कर बनाती हैं। इसे डिज़ाइन करने में लाल, हरा, चमकीला पीला और कुछ अन्य चमकीले रंगों का उपयोग किया जाता है। ऐसे बर्तन बहुत ही मनभावन कलात्मक सौंदर्य पैदा करते हैं। यह बर्तन दो भागों में विभाजित होता है, एक ढक्कन और दूसरा बर्तन का मुख्य भाग।

टेराकोटा के अन्य उत्पाद : पश्चिम बंगाल के बांकुड़ा जिले के पंचमुरा गाँव के कुम्भकार टेराकोटा उत्पादों को तैयार करने के लिए जाने जाते हैं। वे बर्तन, टाइलें, खिलौने, मूर्तियाँ, विंड-चाइम्स से लेकर मंदिर के पैनल तक सब कुछ बनाने में लंबे समय से संलग्न रहे हैं। पहले घोड़ों, हाथियों, बंदरों और अन्य जानवरों के अभिकल्प मूल रूप से इच्छा पूर्ति के लिए गाँव के अनुष्ठानों में उपयोग किए जाते थे, लेकिन आजकल ये उत्पाद सजावट के लिए भी प्रयुक्त हो रहे हैं। यहाँ प्रायः शिल्प मेलों और प्रदर्शनियों में महाकाव्यों, प्रकृति और लोक-कथाओं के दृश्यों के साथ अनेक प्रकार के चित्रित टेराकोटा देखे जा सकते हैं। किन्तु बांकुड़ा के शिल्पकार प्रमुखतः टेराकोटा के घोड़े बनाने के लिए जाने जाते हैं, जिन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उनकी भव्यता और अद्वितीय आकर्षण के लिए सराहा गया है।

बांकुड़ा घोड़ा अखिल भारतीय हस्तशिल्प बोर्ड का आधिकारिक चिह्न भी है। बांकुड़ा जिले में पंचमुरा के अतिरिक्त राजग्राम, सोनमुखी और हमीरपुर ऐसे स्थान हैं, जहाँ मुख्य रूप से इन घोड़ों के साथ ही हाथियों का भी निर्माण

किया जाता है।

उत्पादों की संरचना : इन उत्पादों के निर्माण में पुरुष चाक का संचालन करते हैं और उस पर जो भी संभव हो निर्मित करते हैं, जबकि महिलाएँ गोल बोतलें, छोटी मूर्तियाँ और गुड़िया बनाती हैं व जीवंत रूपांकनों को चित्रित करती हैं। हालाँकि इनमें से प्रत्येक स्थान की अपनी विशिष्ट स्थानीय शैली है, लेकिन पंचमुरा शैली के मिट्टी के बर्तनों को सभी प्रकारों में सबसे अच्छा और बेहतरीन माना जाता है।

निष्कर्ष :

बंगाल प्राचीन काल से ही टेराकोटा का मुख्य केंद्र रहा है। विष्णुपुर के टेराकोटा मंदिर इसका ज्वलंत उदाहरण हैं। टेराकोटा पात्रों और उत्पादों के निर्माण की परंपरा संभवतः इसी परिक्षेत्र से अन्य स्थानों तक फली-फूली। पुरातत्व और सौंदर्य की दृष्टि से यह लकड़ी, धातु, पत्थर सहित अन्य माध्यमों की तुलना में अधिक आकर्षक और व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। टेराकोटा मिट्टी के बर्तन उद्योग का एक सार्वभौमिक रूप से महत्त्वपूर्ण रूप बन गया है, जिसका इतिहास के प्राचीन काल से लेकर समकालीन लोक और सामाजिक जीवन तक सतत उपयोग होता आ रहा है। इसका एक प्रमुख कारण माध्यम के रूप में मिट्टी की सुलभ उपलब्धता है। मिट्टी को आसानी से विभिन्न आकृतियों और आकारों में ढाला जा सकता है। इसके अलावा, चूँकि मिट्टी सर्वत्र उपलब्ध है, इसलिए यह माध्यम अभी भी लोककला और आदिवासी सामुदायिक जीवन में सक्रिय रूप से प्रचलित है।

संदर्भ :

1. अग्रवाल, वासुदेव शरण। (2023). भारतीय कला : प्रारंभिक युग से तीसरी शती ईसवी तक। सं. पृथ्वी कुमार अग्रवाल। पृथ्वी प्रकाशन, वाराणसी।
2. राय, गोविन्दचन्द। (1997). प्राचीन भारतीय मिट्टी के बर्तन – पुरातत्व। वाराणसी : चौखम्भा विद्याभवन प्रकाशन।
3. रंजन, अदिति एवं रंजन, एम. पी। (2009). हैंडमेड्स ऑफ इंडिया। एबिवेल प्रेस।
4. Biswas, B. (2023). Terracotta Art of Bengal: Bengal an Analytical Study
5. Biswas, S.S. (2023). Terracotta Art of Bengal. Agam kala prakashan
6. Chowdhury, Shamshad. (March 2023). Folk Traditional Terracotta Pottery: An Aesthetic and Archaeological Exploration. International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM). 5:3
7. Rahman, Sadikar. (2019). The last of the Srighat Artisans. The last of the Srighat Artisans | The Business Standard
8. Kenoyer, Jonathan Mark. (1991). The Indus Valley Tradition of Pakistan and Western India. Journal of Worm Prehistory. 5:4
9. Thakur, Meenakshi. (2022). Ancient Terracotta art of Bengal – a living tradition. Journal of Arts, Humanities and Social Sciences. 5:4. DOIs:10.2018/SS/202204002

10. Kumari, Kriti. (2019). Bengal terracotta art- A formal analysis. https://www.scribd.com/document/406976407/BENGAL-TERRACOTTA-ART-A FORMAL-ANALYSIS-pdf
11. Panday, P. & Shambhu das, S. (2005). A compilation of Articles from Akhand Jyoti. https://www.scribd.com/document/524696876/Vedic-Symbols
12. Guha, Sudashana. (2017). Terracotta Temples of Bengal: A Culmination of Pre-existing Architectural Styles. https://www.scribd.com/document/791409858/Terracotta Temples-of-Bengal-a-Culmination-of-Pre
13. History of Indian Ceramic. Indian Ceramic Art Foundation. HISTORY: ICAF
14. Mukharjee, Nayanika. https://www.outlookindia.com/outlooktraveller/explore/story/70059/5-rare-indian pottery-traditions-you-should-know-about